P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-4* ISSUE-1* (Part-1) April- 2019
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

अलवर संग्रहालय में संग्रहित अभिलेखों में वर्णित सांस्कृतिक विरासत एवं निरन्तरता

सारांश

पुरातात्विक स्त्रोतों के रूप में सबसे महत्वपूर्ण स्थान अभिलेखों का आता हैं। अभिलेख पत्थर अथवा धातु जैसी अपेक्षाकृत कठोर सतहों पर उत्कीर्ण किए गए पाठन सामाग्री को कहते हैं। इनमें वंषावली, विजय, दान, उपाधियाँ, शासकीय नियम उपनियम सामाजिक नियमावली आदि का विवरण होता है। अलवर संग्रहालय में संग्रहित अभिलेख प्रमुखतः मध्यकालीन है। जिसमें बहलोललोदी, अकबर, इस्कन्दर इस्वी, स्थानीय शासक मथानदेव का अभिलेख हीरानन्द का अभिलेख, राजोड़गढ़ का अभिलेख, श्रद्धा अभिलेख, बहादुरपुर अभिलेख, जैन अभिलेख, सती अभिलेख, तथा सैण्ड स्टोन अभिलेखों से तत्कालीन भाषा, शासकों द्वारा किए गए लोक–कल्याण कार्य, तत्कालीन समाज, संस्कृति, शासकों की सीमाएँ, राज–व्यवस्था आदि की विस्तृत जानकारी मिली हैं।

रूचिका सैनी
शोधार्थी,
इतिहास विभाग
रा.ऋ.भृ.मत्स्य विश्वविद्यालय,
अलवर

मुख्य शब्द : नायाब–उल–मुल्क, मनसद–ए–अली, जिलकायदा, खानजाद, गुम्बद, तुगरा शैली, अरेबिक शैली, पार्शियन शैली, नश्तालीक लेखन शैली, ब्रह्मगुप्तासिद्धान्त पुस्तक

प्रस्तावना

अलवर राजपरिवार की अपने व्याक्तिगत संग्रह में कला पुरा–सामगी को संग्रह करने और सुरक्षित रखने में हमेशा रूचि रही। महल के कारखानों में राजसी रूचि अनुसार तैयार करवायी जाती थी और समय–समय पर अन्य कला केन्द्रो से क्रय भी की जाती थी। सिटी पैलेस (वर्तमान संग्रहालय भवन) का निर्माण कार्य अलवर के द्वितीय शासक महाराजा बख्तावर सिंह ने शुरू करवाया। परन्तु इसका पूर्ण विकास महाराजा विनय सिंह के कार्यकाल में हुआ। शाही मेहमानों के लिए दौलतखाना में कला सामाग्री का प्रदर्शन किया जाता था।

महाराजा विनय सिंह के कार्यकाल में पुस्तकशाला (पुस्तकालय) महल परिसर में शुरू हुआ। महाराजा जयसिंह ने गुणीजनखाना के गायकों के लिए महल के सबसे ऊपरी मंजिल पर तीन बड़े कक्षों का निर्माण करवाया। 1909 में पुस्तकशाला, सिंहलखाना तथा तोशाखाना से चयन की गई उत्कृष्ट कला पुरासामग्री को महल के नुमायशखाना में प्रदर्शित किया गया।

1940 में प्रधानमंत्री मेजर हर्वे ने शाही संग्रह के प्रदर्शन को आधुनिक रूप देते हुए महल की ऊपरी मंजिल पर स्थित तीन बड़े कक्षों को संग्रहालय का रूप देने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की गई थी। इससे प्रेरित होकर राजस्थान में अधिकांश राजपरिवारों द्वारा स्वयं के संग्रह को संग्रहालय के रूप में स्थापित किया गया। 12 जून 1940 को ये संग्रहालय आम लोगों के अवलाकनार्थ खोला गया। संग्रहालय तीन बड़े कक्षों में विभाजित है। प्रथम कक्ष में अलवर के चतुर्दिक स्थलों से प्राप्त प्रस्तर प्रतिमाएँ, शिलालेख, वाद्ययंत्र, वस्त्र परिधान, मृदभाण्ड़, कश्मीरी और चन्दन की लकड़ी पर कलात्मक कार्य की वस्तुएँ एवं अलवर के राजाओं द्वारा शिकार किए गए जंगली जानवर आदि प्रदर्शित है।

द्वितीय कक्ष में फारसी, संस्कृत, उर्दू, एवं हिन्दी भाषा के हस्तलिखित ग्रंथ, तैल चित्र, हाथीदांत पर चित्र, एवं विभिन्न विषयों से सम्बन्धित लघु चित्र प्रदर्शित है। तृतीय कक्ष में अस्त्र–शस्त्र यथा धनुष बाण, परशु, जागनोल, ईरानी दाव, घुरियाँ, पेशकब्ज, कटार, विभिन्न प्रकार की तलवारे, गुर्ज, गुप्ती तथा आग्नेयास्त्रों में तोडेदार, पत्थर कला, टोपीदार बन्दूकों एवं तमन्चों के साथ–साथ रिवाल्वर व आधुनिक बन्दूकें एवं बारूददानियाँ प्रदर्शित है।

इस प्रकार देखा जाए तो संग्रहालय का उपरोक्त संग्रह राजस्थान के संग्रहालयों में अति उत्कृष्ट श्रेणी का है।

अध्ययन का उद्देश्य

इस लेख में मुख्यतः अलवर संग्रहालय के अभिलेखो में वर्णित समाज राजनीति, अर्थव्यवस्था, धर्म, संस्कृति का ऐतिहासिक वर्णन है। अभिलेख समय के मूक दृश्टा होते है। इनमें राजाओं के द्वारा कराये गये कार्यो, राजा की उपलब्धियों, उपाधियों, वंशावलियो आदि का वर्णन मिलता है। इस लेख में अभिलेखो के द्वारा सांस्कृतिक निरंतरता की प्रक्रिया की व्याख्या संक्षिप्त रूप में की गई है।

अलवर संग्रहालय के अभिलेख

बहलोल लोदी का अभिलेख

लोदी कालीन यह अभिलेख पीले बलुआ पत्थर पर 03 लाइनों में खुदा हुआ है, जो तुगरा शैली में किसी भी निशान के बिना 'नस्क' में निष्पादित हैं। हालांकि यह क्षतिग्रस्त है, परन्तु यह सुपाठ्य है। यह अलवर संग्रहालय में स्थित तीन फारसी अभिलेखों में सबसे प्राचीन है। इसे 1920 में गौरी शंकर ओझा द्वारा खोजा गया। इस अभिलेख में अलवर जिले में स्थित नवगाँव नामक किले के द्वार को बहलोल लोदी द्वारा पुनःनिर्मित करवाने का उल्लेख है, जो मोहम्म्द शाह के समय टूट गया था।

नवगाँव के नायाब–उल–मुल्क, मनसद–ए–अली अतावल खाँ के समय नवगाँव के किले एवं मीनार के द्वार को जनारिया खाँ के बेटे जलाल खाँ द्वारा पुनःनिर्मित करवाया गया। इसका निर्माण जिलकायदा महिने के 22 वें दिन शुरू किया गया जो कि मुहर्रम के महिने में पूरा हुआ।

जलाल (स्थापत्यकार) के बारे में निश्चित जानकारी नहीं थी परन्तु इतना स्पष्ट है कि इसका सम्बन्ध शहर की मुख्य जिम्मेदारियों से था। संभवतः यह प्रान्त का गवर्नर रहा होगा।

अलावत खाँ नामक व्यक्ति का सम्बन्ध खानजाद पद से हो सम्बन्धित हो सकता हैं। परन्तु इस लेख में उस अवधि के ऐतिहासिक कार्यों में उसके किसी प्रकार के योगदान को नहीं दर्शाया गया है। मनसद–ए–अली की उपाधि उसके नाम के आगे उसके उच्च दर्जे को दर्शाती है कि उसने जरूर बहलोल शाह के विद्वान दरबारियों के बीच उच्च स्थान प्राप्त किया होगा। परन्तु बाद के शासनकाल के वर्षो में उसका उल्लेख नहीं मिलता।

कनिंघम के अनुसार 1482 ए.डी. में निकुम्भ नामक व्यक्ति ने अलावत खाँ, को निर्वासित कर दिया गया। अलावत खाँ को अहमद खाँ का पुत्र बताया गया है एवं यह हसन खाँ मेवाती का चाचा था जिसे बाबर का प्रतिद्वन्दी माना जाता है। द्रोन नामक विद्वान द्वारा तारीख–ए–शेरशाही का अनुवाद किया गया। जिसमें अलावत खाँ को हसन खाँ मेवाती के पिता के रूप में दर्शाया गया है।

मेजर पॉउलेट द्वारा इस अलावत खाँ को अलावलपुर के निर्माता के रूप में दिखाया गया है। इस शहर के अवशेष तिजारा तहसील के पूर्व दिशा में पाये गए है। तिजारा को मेवातियों की सरकार के केन्द्र के रूप में जाना जाता था। लेकिन अलावलपुर के निर्माता के रूप में मेजर पाउलेट बहलोल लोदी के अन्य भाई अल्लाउद्दीन आलाम खान लोदी को भी मानता हैं। जिसे सुल्तान के उन चालीस अधिकारियों के बीच में से एक बताया हैं, जिनका उल्लेख गुप्तचर अधिकारियों के रूप में हुआ।

Translation

1. O God, this edifice of the city wall and gate of the town Navaganwa, which had, through lapse of days and passage of years, come to ruins-
2. in the auspicious reign of Bahlol Shah, the king and uring the Governsrship of Governor of the districh (Dali-i-Dilayal) Masanad-i-Ali, Alawal Khan, the servant of the court of the compassionate Lord, (Namely)
3. Jalal, son of Zakariya, son of Ahmad, son of Jalal constructed it anew on the 22nd of the month of Zil-Qa'da. And it was ready in the month of Moharram, year eight hundred and eighty-eighy (A.H. 888, Muharram = Feb.-March 1483 A.D.)

अकबर का अभिलेख

यह नवगाँव में एक गुम्बद के पास की दीवार से मिला है। इस अभिलेख में 8 लाइनें है, जो अरेबिक भाषा से शुरू है एवं पर्शियन भाषा के साथ खत्म होती है। लेखन शैली नश्तालीक शैली है जिसका क्रियान्वन निष्पक्ष है। इस लेख का कुछ भाग क्षतिग्रस्त हैं। यह 16वीं शताब्दी का है, जिसमें अकबर के शासनकाल का वर्णन हैं, साथ ही एक कुएँ के निर्माण का भी उल्लेख है जिसे नाथू घूसर के दो बेटों शहबाज खान एवं सरवर खान के द्वारा बनाया गया।

Translation :

1. He is great (Akbar)
2. On the 10th of the month of Jamadi ul II, year 989 A.H. 12th jul. 1581 A.D.)
3. In the reign of His Majesty Jalalu'd-din.
4. Mohammad Akbar Badshah-i-Ghazi.
5. In the environs of the town of Navaganwa, the respectable.
6. Shahbaz Khan and Sarwar Lhan Larori, Sons of
7. Nathu Dhusar, constructed a well.
8. The right of (whose) peoperty is theirs.

धासुर नामक जाती का अस्तित्व वर्तमान में भी है। कुएँ के निर्माणकर्त्ता भाईयों का समाज में महत्वपूर्ण स्थान रहा होगा।

इस्कन्दर–इसावी का अभिलेख

यह मूल रूप से अलवर के पूर्वी क्षेत्र तिजारा से पाया गया है। अभिलेख में फारसी भाषा के 03 छन्द टुकड़ो में नश्तालीक शैली में उत्कीर्ण है। पहले के रिकॉर्ड्स के अनुसार यह अकबर के साम्राज्य का माना गया परन्तु यह बात इस अभिलेख में नहीं हैं। इस लेख के रचियता 'गुबारी' को माना गया है। इसमें 1013 सामान्य संवत में इस्कन्दर इसावी द्वारा निर्मित एक हम्माम का उल्लेख है। इस्कंदर ने हमाम का निर्माण करवाया इस बात के संकेत तत्कालीन साहित्य में उपलब्ध होने की जानकारी का अभाव है। उनका विशेषण, 'इसावी' जिसका अर्थ (शाब्दिक अर्थ) ईसा (ईसामसही) से सम्बन्धित है। यह इंगित करता है, कि उन्होंने ईसाई धर्म को अपनाने का प्रयास किया। संभावना है कि यह इस्कन्दर वही अर्मेनियाई पुरूष है जिसका वर्णन जहांगीर ने किया है। जहांगीर ने लिखा है कि इस अर्मेनियाई पुरूष का विवाह उस अर्मेनियाई युवती के साथ हुआ जो शाही अन्तःपुर में काम करती थी। इन दोनों का विवाह अकबर ने स्वयं सम्पन्न करवाया। कवि गुबारी इस लेख का निर्माता है।

Translation:

1. What a life-giving hammam Iskandar-i-Isawi that grand man has constructed;
2. that, the said pleasant abode, in respect of greatness and beauty has become celebrated in the world due to its life refreshing quality.
3. Since the chronogram for the hamman of Iskandar is sought, O Ghubari, say : (it is) a place which imparts life to Jashed.
4. Year 1013 (A.H. = 1604-5 A.D.)

मथानदेव का अभिलेख

यह प्रसिद्ध अभिलेख का मूल स्थान राजोरगढ़ तहसील का पुराने किला है जो अलवर जिले में स्थित है। यह प्रतिहार वंश के राजा श्री मथानदेव से सम्बन्धित है। 7वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में आए चीनी यात्री व्हेनसांग ने गुर्जर प्रदेश की यात्रा की तथा उस की राजधानी को भीनमाल नाम से सम्बोधित किया जो कि जोधपुर के दक्षिण में स्थित है।

महाक्षत्रप रूद्रदामन के अभिलेख में 72 शक संवत में गुर्जर प्रदेश की जगह दो अधीनस्थ क्षेत्र सांभर एंव मरू का उल्लेख मिलता है। यह तथ्य दर्शाता है कि दूसरी शताब्दी सामान्य संवंत में यह क्षेत्र 'गुर्जर प्रदेश' के नाम से नही जाना जाता था। संभवतः यह क्षेत्र क्षत्रपों के आने के बाद विकसित हुआ। (7वीं शताब्दी के पूर्वाध तक)

भीनमाल के प्रसिद्ध ज्योतिषी ब्रह्मगुप्त द्वारा अपनी पुस्तक ब्रह्मगुप्तासिद्वान्त में वर्णन मिलता है कि चस्प वंश (चवड़ा वंश/चावड़ा वंश/चावड़ वंश) के राजा व्याघ्रामुखा ने 628ई०पू० में क्षत्रपों को भीनमाल क्षेत्र से निकाल दिया था।

गुर्जर राजाओं के ताम्रपत्र शिलालेखों से यह सिद्ध होता है कि इनकी एक केन्द्र भडौच (गुजरात) एवं दूसरा राजियापुरा (राजेरगढ़) अलवर का पश्चिमी भाग था। इसमें 23 लाइनें उकेरी गई है। अभिलेख की लिपि 'कुटिला' है जबकि भाषा संस्कृत है। इसमें काले पत्थर का इस्तेमाल हुआ।

इस अभिलेख में लिखा गया है कि 959 सा.स. में कन्नौज के शासक परम भट्टारक महाराजाधिराज परमेश्वर श्री क्षितिपालदेव के पुत्र महराजाधिराज श्री सत्व गुर्जर प्रतिहार वंशज जिनको परम भट्टारक महाराजा परमेश्वर श्री विजयपाल देव के पुत्र महाराजाधिराज परमेश्वर श्री मथांनदेव ने अपनी माता लच्युक की याद में लच्छुकेसवारी महादेव का मंदिर बनवाया। जो व्याग्रपरक में स्थित है। इस अभिलेख को राजमिस्त्री दादो एवं हरिना द्वारा लिखा गया है। वे बताते है कि उन्हें श्री विजयपालदेव एवं क्षितिपालदेव राजाओं के बीच काफी ऊचाँ दर्जा प्राप्त था। गुर्जर–प्रतिहारों की उत्पत्ति से सम्बन्धित बहुत मत है। अधिकांश विद्वानों की राय है कि वे विदेशी शाखा से सम्बन्धित है। लेकिन गुर्जर प्रतिहार राजा जयभट्ट के शिलालेख से उनकी उत्पत्ति महाभारत के प्रसिद्ध व्यक्तित्व कर्ण से मानी जाती है। अतः यह माना जा सकता है कि गुर्जर–प्रतिहार का मूलनिवास भारत ही रहा और वे क्षत्रिय जाति से सम्बन्धित रहे।

राजोगढ़ का अभिलेख

यह अभिलेख राजोरगढ़ में एक महाजन (साहूकार) के घर से खण्डित अवस्थामिला है। इस लेख में लिपि कुटिला व भाषा संस्कृत है। माना जा सकता है कि यह कोई बड़ी प्रशस्ती रही होगी क्योंकि वर्तमान में इस अभिलेख में केवल 18 लाइनें ही मौजूद है। यह लेख 996 सामान्य संवंत का है एवं इसमें माथुर (कायस्थ) परिवार के कुछ सदस्यों का वर्णन है, जिन्होनें शायद एक मंदिर का निर्माण करवाया। इस अभिलेख में प्रभावती नाम की एक रानी तथा किसी एक व्यक्ति का वर्णन है, जिसकी शादी गौनाका की बेटी से हुई है। इस प्रशस्ती को छाज्जुका के पुत्र सूत्रधार त्रिविक्रम ने उकेरा है।

हीरानन्द का अभिलेख

यह अभिलेख अलवर बस स्टैण्ड के पास जैन मन्दिर में पाया गया था। यह अभिलेख लम्बे समय तक शहरी दीवारों में छिपा था। 1941 सामान्य संवंत में जब शहर का विस्तार किया गया तो यह अभिलेख मिला। शिलालेख अकबर के शासनकाल से सम्बन्धित है। इसमें 19 लाइनें है। इसकी भाषा संस्कृत एवं लिपि देवनागरी है। यह अभिलेख संगमरमर के पत्थर पर उत्कीर्ण है एवं 1589 सामान्य संवंत का है। इसमें आगरा के निवासी शाह हीरानन्द द्वारा अलवर शहर में जैन तीर्थंकर परिवार के लिए चैत्य मंदिर निर्माण का रिकार्ड है।

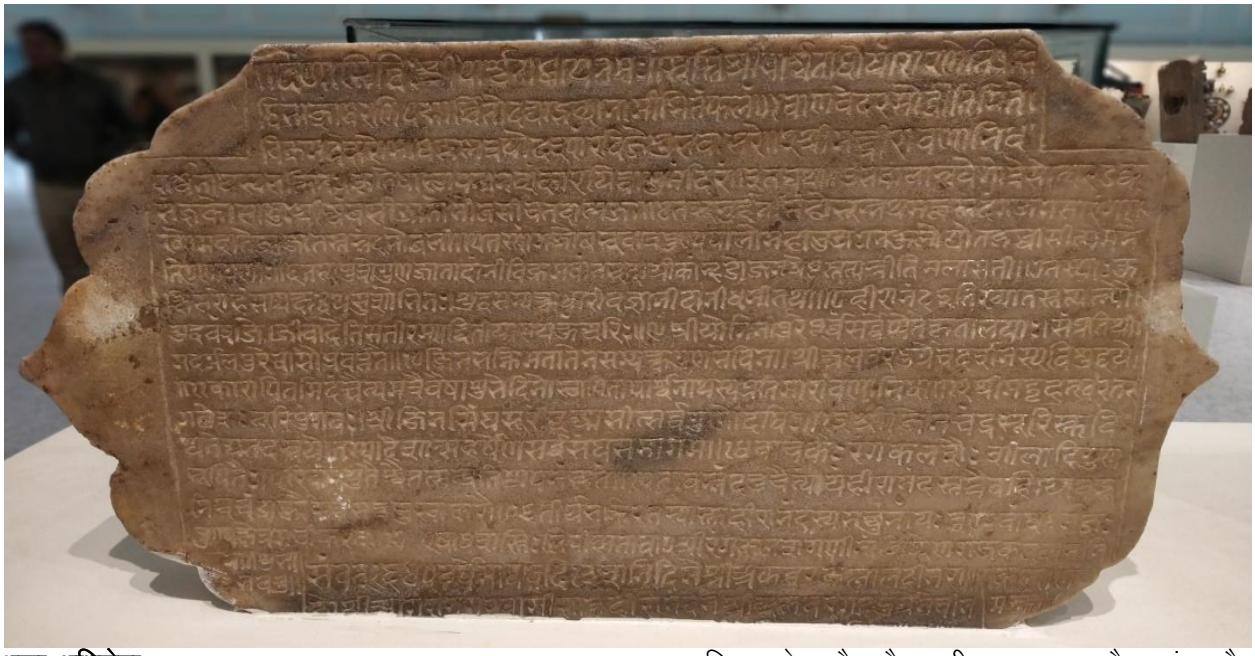

श्रद्धा अभिलेख

यह अभिलेख 1782 सा.स. का है इसकी भाषा हिन्दी है तथा इसमें 15 लाइनें लिखी गई है। इस अभिलेख में श्री गणेश, महादेव एवं गुरू गोरखनाथ तथा अयोध्या, मथुरा, काशी आदि तीर्थस्थलों को श्रद्धांजली व्यक्त करने का उल्लेख है। इसमें महाराज सवाई प्रताप सिंह के आदेश पर भोरा सियालाल द्वारा जयपुर के महाराजा सवाई जयसिंह के पिण्डदान समारोह का उल्लेख है।

महाराजा सवाई प्रताप सिंह (1764–1803) जयपुर (राजस्थान) के कछावाहा शासक थे वे अपने पिता माधोसिंह के उत्तराधिकारी बने सवाई प्रताप सिंह, महाराजा सवाई जयसिंह–द्वितीय के पौत्र थे। सवाई प्रताप सिंह द्वारा जयपुर में हवामहल का निर्माण करवाया गया। उन्हें भगवान कृष्ण की भक्ति के लिए महान शासक के रूप में जाना जाता है।

रामायण महाकाव्य में भी श्रीराम द्वारा राजा दशरथ के लिए पिण्डदान किया गया था। माना जाता है कि पिण्डदान से मोक्ष प्राप्ति के मार्ग में मुख्य संस्कार है।

बहादुरपुर का अभिलेख

यह शिलालेख अलवर से 15 मील पूर्व में स्थित एक बहादुरपुर नामक गॉव से मिला है। यह अभिलेख 1517 सा.स. का हें यह अकबर के शासनकाल की शुरूआत से सम्बन्धित है। इसमें तीन लाइने है। इसमें खरातरा नामक किले में चैत्य मंदिर निर्माण का उल्लेख है जो जैन तीर्थंकर आदिनाथ को समर्पित करता है। आदिनाथ जैन धर्म के प्रथम तीर्थंकर है। उनके अन्य नाम रिषभदेव, आदिशजीना (पहला विजेता) आदिपुरूष, इक्ष्वाकु है।

चैत्य एक बौद्ध या जैन मंदिर है जिसमें एक स्तूप समाहित होता है। भारतीय वास्तुकला से संबंधित आधुनिक ग्रंथों में, शब्द चैत्यगृह उन पूजा या प्रार्थना स्थलों के लिए प्रयुक्त किया जाता है जहाँ एक स्तूप उपस्थित होता है। चैत्य की वास्तुकला और स्तंभ और मेहराब वाली रोमन डिजाइन अवधारणा में समानताएँ दिखती हैं।

जैन अभिलेख

यह एक लाल पत्थर पर खुदा हुआ 9 लाइनों का अभिलेख है जिस की लिपि देवनागरी एवं भाषा संस्कृत है। यह 1570 सा.स. का है। इसमें कुछ जैन मंदिरों का उल्लेख किया गया है।

सैंड स्टोन अभिलेख

इसमें 9 लाइनें है जो देवनागरी लिपि में एक सैंड स्टोन पर उकेरी गई है। यह मूल रूप से मचेरी नामक गाँव से मिला है, जो राजगढ़ तहसील में स्थित है। इसमें एक मानव आकृति तीन पक्षियों के साथ दर्शायी गई है। यह अभिलेख 1370 ई० का है। इस अभिलेख में उल्लेख मिलता है कि 1370 ई० में गजदेव नामक व्यक्ति जो बड़गुर्जर परिवार से सम्बन्धित था, उसके परिवार की कुछ महिलाएँ सती हो गई।

सती स्टोन अभिलेख

इस अभिलेख का नीचला भाग टूटा हुआ है जो इस समय मौजूद नहीं है। अभिलेख के शेष टुकड़े में 11 लाइनें मौजूद है जो देव नागरी लिपी में उकेरी गई है। इसके शब्द बहुत ही छिन्न–भिन्न अवस्था में है जिसके कारण यह अभिलेख अपठनीय है।

निष्कर्ष

उपर्युक्त लेख में अलवर संग्रहालय में रखे गए अभिलखों का संक्षिप्त वर्णन है। इन अभिलेखों से जहाँ एक ओर तत्कालीन निर्माण कार्यों का पता चलता है तो दूसरी ओर राजा द्वारा जनता की भलाई हेतु बनायी गयी नीतियों के विषय में भी जानकारी मिलती है। ये अभिलेख बहुत ही मूल्यवान है, क्योंकि इनसे तत्कालीन अर्थव्यवस्था, राजा का नाम, राजा की उपाधियाँ, सामाजिक प्रणाली, उनके धार्मिक विश्वास और उनकी व्यापार प्रणाली आदि के विषय में जानकारी मिलती है। अतः कहा जा सकता है

कि प्राथमिक स्त्रोत के रूप में अभिलेख तत्कालीन जीवन के मूक दृष्टा के रूप में उभर कर सामने आते है।

संदर्भ–ग्रंथ सूची

1. *इण्डियन आर्कियोलॉजी ए रिव्यु 1955–56, 1962–63*
2. *आर्कियोलॉजिकल रिपोर्ट फोर 1864–65, कनिघंमस् रिपोर्टस 1864–65*
3. *पुरापतत्व एवं संग्रहालय विभाग से प्रकाशित राजकीय संग्रहालयों के फोल्डर द रिसर्चर वोल्यूम 16–17, 1995–96*
4. *कैटलॉग एण्ड गाईड़ टू गर्वनमेन्ट म्युजियम, अलवर, डिपार्टमेन्ट ऑफ आर्कियोलोजी एण्ड म्यूजियम, गवर्नमन्ट ऑफ राजस्थान, पार्ट–1, 1960–61*
5. *पावलेट, पीडब्लू, अलवर का गजेटियर, 1838*
6. *चन्द्रमणि सिंह, राजस्थान के संग्रहालय, मैपिन प्रकाशन जी.पी. प्राइवेट, लिमिटेड, 2010*
7. *हूजा रीमा, राजस्थान : ए कॉन्सिस हिस्ट्री, रूपा पब्लिकेशन, 2018*
8. *इण्डियन आर्कियालॉजी : ए रिव्यू आर्कियोलॉजिकल सर्वे ऑफ इण्डिया, न्यू देहली*
9. *रिसर्चर, बुलेटिन ऑफ दी राजस्थान आर्कियालॉजी एण्ड म्यूजियम जयपुर*
10. *आदम, थामस आर. : द सिविक वैल्यू ऑफ म्युजियम्स, न्यूयार्क, 1959*
11. *इडल, डी. एच. : म्युजियम रजिस्ट्रेशन मैथड, वाशिंगटन, 1935*
12. *कार्ल, ई. गुथे : गाइड टु मैनेजमेण्ट ऑफ स्मॉल म्युजियम, अमेरिकन एसोसिएशन ऑफ म्युजियम्स, 1957*
13. *सहरिया, डॉ. फूल सिंह : अलवर इतिहास, मेवाती साहित्य अकादमी स स्थान, अलवर, 2016*